ओमप्रकाश : नुरुद्दीन

[दो शहीद]

एक अर्थी : एक जनाज़ा

- बदरी नारायण सिनहा

ओमप्रकाश: नुरूद्दीन
(दो शहीद)

एक अर्थी : एक जनाज़ा

दो मासूम, पर होनहार बच्चे उठ गये ! ये कुछ भी हो सकते थे, भारत के राष्ट्रपति से लेकर सा धारण कृषक या श्रमिक, पर अब कुछ न हो सकेंगे ! अर्थियाँ उठ गईं : एक गृह में जाकर ही ये ईश्वर की औलाद बन स के, अलग-अलग गृह में रहकर नहीं ; वह गृह था शव-परीक्षण-गृह, मृत्यु ने इन्हें एक किया, जीवन इन्हें एक नहीं कर सका था, धर्म ने जिनके बीच बहुत चौड़ी खाई खोद डाली थी, वह सब मृत्यु की गोद में एक हो गये ! एक थी अर्थी, दूसरा जनाज़ा ! एक में थे रामायणी लोग, दूसरे में कुरानी ! और, इन रामायणियों और कुरानियों को समझा रहे थे जन-प्रतिनिधि, प्रशासक, व्यापारी, संसारी, पंडित, मुल्ला, पादरी, सब्र करो, शहीद हो गये, बेकसूर थे ! क्योंकि इनमें शोला न भड़के, इसका ध्यान था, डर था, समाज का तकाजा था !

बवंडर शुरू हुआ था हिंदी को लेकर, कबीर, खुसरो, जायसी, रहीम, रसखान की हिन्दी को लेकर, सूर, तुलसी, मीरा, केशव, भारतेंदु की हिंदी को लेकर, बवंडर भारत में, हिन्दुस्तान में ! दोषी कौन ? हिंदी ? हिन्दू ? मुसलमान ?

'राम नाम सत्य है' की ध्वनी एक ओर, दूसरे ओर 'खामोशी' मृत्यु और राम के सत्य को दुहरा-दुहरा कर एक टोली बे-दर्द हो रही थी, दूसरी सीने पर पत्थर रखकर, लाश ढोकर ! अर्थी जिस द्वार से गु जरी उसी द्वार से जनाजा भी, दो मासूम बच्चे, बालिग हो रहे बच्चे, होनहार बच्चे, हिन्दुस्तान के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तक होनेवाले बच्चे, हिन्दुस्तान, नहीं, नहीं, भारतवर्ष, नहीं, नहीं, इस उप-महादेश के दो टुकड़े, एक जिगर के दो टुकड़े, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान , हिन्दू , इसलाम की दो संतति, विद्यामंदिर, तालिमे-मस्जिद में शहीद होकर ये बच्चे, तुम्हारे बच्चे, हम सबों के बच्चे चले गए, कह गये, इन दोनों के बलिदान से भी तो कुछ सबक सीखो, नव संगठन करो, वे बच्चे हमारे मसीहा बनकर चले गये !

अर्थी पर जो सोया था उसका नाम था ओमप्रकाश, संपूर्ण हिन्दू धर्म को बांधनेवाला, ज्योतिर्मय, प्राणवंत करनेवाला 'ओम' !

जनाजे पर जो लेटा था उसका नाम था नुरू द्दीन, वह भी नूर, इलाही का ही नूर, प्रकाश, नाम भी दोनों के एक !

एक और संयोग : दोनों के पिता एक ही जगह से खबर पाकर दौड़े थे, 'ओमप्रकाश' को क्या हुआ है मैं खुद देखूंगा, आरक्षी अधिकारी, दंडाधिकारी से चीत्कार करता हुआ, दूसरा 'नूर' आँखों का प्रकाश, बुड्ढे, जर्जर, खानसामे का प्रकाश ढूंढ रहा था; एक उदात किसान दूसरा गरीब इन्सान, अपने-अपने खानदान का प्रकाश ढूंढ रहा था; पर वह प्रकाश गुल हो चुका था, वह प्रकाश

अब जगमगा नहीं सकता ! दोनों ने विद्या के लिये, तालीम के लिये अपने पेट काटकर अपने लाड़ले को दाखिल किया था, पर विद्यामंदिर और तलिमे-मस्जिद की अंधीयाली ने इन्हें कातिल कर दिया था !

ओम के पिता 'भूप' को अब धूप लगेगी ? नहीं , वह अंधियाली में सर्द होकर ही सिहरेगा ! नूर के पिता की आँखों में अब क्योंकर ज्योति छिटकेगी ?

'वसुधैव कुटुम्बकम' की टेर ! 'बिस्म्ल्लाह रहमाने रहीम' की शेर ! दोनों काफूर ! सम्पूर्ण दुनिया को कुटुम्ब, परिवार के रूप में देखनेवाली जाती, सबसे कृपालु खुदा को माननेवाली बिरादरी, दोनों की ज्योति, दोनों के नूर !

चीख सुन पड़ रही है ! माताओं की चीख ! ओम की माँ है ! नूर की अम्मा है ! बड़े दुलार से पुत्रों को पाला था ! खूब लोरियाँ गाईं थीं, खूब मिठाइयाँ बाँटी थी, आशीर्वादी के जंतर पहनाये थे, दुआ की ताबीज लट काई थी, पंडितों से पत्रा दिखला ये थे, मुल्लाओं से शैतान भगवाये थे ! पर कुछ भी इन आँचलों की लौ को बुझने से बचा न सका चूंकि एक भयंकर शैतान अभी भी जिन्दा है, जिसके बड़े-बड़े जबड़े है और नाखून भी बड़े तगड़े है, वह शैतान भगवान की तरह इस संसार में, जहां में, सर्वत्र व्याप्त है, मरा नही है, हर इन्सान के दिल में जिन्दा है ! संप्रदाय की कवच पहनकर जिन्दा है ! लाखों जिस्मो का खून चूसकर जिन्दा है, बीस वर्ष पहले से ही एक मोहनदास करमचंद गांधी को खाकर

जिन्दा है, आर्यावर्त के दो टुकड़े कर जिन्दा है, वह कितने 'ओम' को खाकर जिन्दा है ! कितने नूर को हड़पकर जिन्दा है !

मैकबेथ ने सोये डंक न को खंजर से मार डाला था, जब उसका शैतान उस पर हावी हो गया था; पर जब उसका भगवान उस शैतान पर हावी हो गया था तब मैकबेथ ने कहना शुरू कर दिया था की उसने डंकन को ही नहीं मार डाला था पर निद्रा को ही खत्म कर दिया था और फिर उसकी निद्रा कभी नहीं लौटी, उसकी स्त्री की भी निद्रा कभी नहीं लौटी, 'ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय' 'ओम' को मार डाला गया था पर मार ने वाले में यह भाव जगा होगा ! नूर को चकनाचूर कर डाला गया था, पर चूर करने वाले को यह दर्द लगा होगा ! यह भविष्य बतलायेगा !

रमजान का पावन महिना ! व्रत, रोजा ! अग्रहण की द्वादशी ! पर रोजा खोला गया ओम के खून से ! द्वादशी मनाई गई नूर के जिगर में कटार मारकर ! यही धर्म है, वही मजहब है, यही नीति है, यही रीति है !!

अस्पताल में बेवशो की भीड़, सशक्तों की भीड़ ! नूरुद्दीन बेहोश ! दिन भर का रोजा था ! सूर्य जब बहुत बुलन्द थे, उस समय नूरुद्दीन के पेट में खंजर ! सूर्य जब डूब गये, तब नूरुद्दीन ने आँख खोली, पानी माँगा, दो घूँट पानी ! फिर पानी ! फिर जो आँख मूंद ली, तो नहीं खोली ! इस जीवन का खेल रो जे और पानी की अफ्तारी से खत्म हु आ ! और ओमप्रकाश ने इह-लीला

सामाप्त की एक अनजाने क्षेत्र में आकर, सात दिनों का नवागन्तुक ओमप्रकाश धरती पर खंजर खाकर सो गया !

शिवेंद्र ने बढाये हुये पान के बीड़े को ठुकरा दिया, ये होंठ सूखे रहने दो, बहुत खून पीये हैं, दो बच्चे के खून से होंठ लबालब है ! अब रंगाई की और जरूरत नहीं, मैकबेथ के हाथों के रंग से यदी सात समुद्र अतिरंजित हो सकते थे, तो इन दो खून से पीढ़ी की पैढ़ी लहू-लहुआन है आज ! पान मत खाओ ! हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लोग, पान मत खाओ ! इन्सान, पान मत खाओ और होंट मत रंगो ! ये बहुत रंग चुके हैं! इनके रंग छुटेंगे नहीं !

गंगा मैया ने ओम की राख ले ली ! गंगा मैया सब मल अपने जल में ग्रहण कर लेती हैं, पवित्र वसुंधरा ने, विपुला धरती ने नूर को अपनी गोद में सहेज लिया, क्योंकि इस धरती ही में सब पौघ अंकुराते है, फूटते हैं ! इस धरती से ही सब कुछ हमें प्राप्त होता है ! और, गंगा या धरती किसकी देन है ? मनुष्य की नहीं ! मनुष्य की देन है - संप्रदाय, राज्य, सियासत, रियासत, लियाकत, क्या-क्या न ? मनुष्य ने जिन्हें ठुकरा दिये, उन्हें गंगा ने, चिर प्रवाहमान धारा ने और धरती ने, नित प्रफूल्ला धरती ने ले लिये!

मंदिरों में घंटों की ध्वनी दिग-दिगंत में फैल रही है, मीनारों से अजान शांत वातावरण को चीर कर कंपन पैदा कर रहे हैं ! वसुधैव कुटुम्बकम, बिस्मिल्लाह रहमाने रहीम!

ओम चीख रहा है, नूर पथ खींच रहा है ! भूप रो रहा है ! शकूर धाव धो रहा है ! कारवाँ जा रहा है ! यह कारवाँ अनन्त है, अनादी है पर चलता जा रहा है !

अर्थी राजपथ पर फूलों से लदकर चली जा रही है ! जनाजा जा रहा है !

ओम ने सफ़ेद चादर से अपने को ढँक लिया है, नूर ने भी ! पर दोनों ने आँख मूद ली है, ओमप्रकाश, नूर; पर मुंदी आँखों से ज्योति फूट रही है, बह रही है, बिछ रही है ! उस ज्योति का तेज सभी खुली आँखों में समा रहा है, बंद आँखों में आ रहा है ! और, अपार भीड़ में, जुलूस में, शिवेंद्र अपने को खो रहा है, कारवाँ जा रहा है ! उस बढ़ते हुये कारवाँ के पीछे जा रहा है, थका, झुका शिवेंद्र, इस देश, इस उप-महादेश के भविष्य की थाती आँखों में सहेज कर !

१५-१२-६७ -- *बदरी नारायण सिनहा,*

२-३० बजे रात्री आरक्षी-अधीक्षक, भागलपुर

कंट्रोल रूम, भागलपुर